

---

# Mrikundukrita Shiva Stuti

---

## मृकुण्डुकृता शिवस्तुतिः

---

### Document Information

---

Text title : Mrikundukrita Shiva Stuti

File name : mRRikuNDukRRitAshivastutiH.itx

Category : shiva, shivarahasya, stuti

Location : doc\_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | shivAkhyaH chaturthAMshaH | adhyAyaH 13 |

14(2)-18, 40-43||

Latest update : August 20, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 20, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

मृकुण्डुकृता शिवस्तुतिः



भालाक्षाध्वरशिक्ष कक्षवसते उक्षेन्द्रकेतो हर  
त्र्यक्षाक्षय्यफलप्रदाक्षविहृते मां वीक्ष्य रक्षां कुरु ।  
भक्ष्यप्रायगरादिपानसमदृग्लक्ष्येऽप्यलक्ष्यो भवान्  
वीक्षाशिक्षितमन्मथान्तकरिपो लीलायितास्ते सुगः ॥ १४ ॥

असुरसुरवरैर्विमथ्यमानाद्गिरिवरघर्षणतो हि सागरान्तात् ।  
गरगुरुमीतिपराहतोर्जितोजोहरिविधिवलमित्प्रपन्न पाहि ॥ १५ ॥

मुरहर शरकर हेमनगोत्तमधारक शङ्कर परिपाहि ।  
तुरगायितनिगमान्तकभीतिद उरगोत्तमभूषण शम्भो ॥ १६ ॥

मधुमथनाक्षिपदाम्बुजपूजित भगणाधिपभाकृतमौले ।  
सजलजलप्रदानिभगल पुरहर भवभयतारक परिपाहि ॥ १७ ॥

इन्दुकलाघर मन्दरवस हर कुन्दसुमोत्तमनिभदेह ।  
बिन्दुकलार्णवपरवरविहृते कर्णदृगन्तधराव्यय पाहि ॥ १८ ॥

श्रीकालकालाय वृषध्वजाय स्कन्दार्चिताय करिचर्मधराय तुभ्यम् ।  
वेदान्तवोधितपदाय सनातनाय देवोत्तमाय सततं भगवन्नमस्ते ॥ ४० ॥

ईशाय कोशनिबहाकृतिदूरगाय भीमाय उग्रशरकार्मुकधारिणे ते ।  
भस्माङ्गरागतनवे नयनाग्निलेशदग्धान्धकत्रिपुरकाम हराय तुभ्यम् ॥ ४१ ॥

उमासहायाय भवोद्भवाय मारोरुकायदहनामललोचनाय ।  
व्यालेन्द्रमाल गरनीलगलाय तुभ्यं विश्वाधिकाय च शिवाय सदा नमस्ते ॥ ४२ ॥

यमदलदलनाय विशालदेहजालाय भूधरशयाय पिनाकिने ते ।  
वालाग्रमात्रहृदयान्तरदीपकाय शुद्धाय ज्ञानतनवे भगवन्नमस्ते ॥ ४३ ॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते शिवाख्ये मृकुण्डुकृता शिवस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । शिवाख्यः चतुर्थांशः । अध्यायः १३ । १४(२)-१८, ४०-४३ ॥

- .. shrIshivarahasyam . shivAkhyaH chaturthAMshaH . adhyAyaH 13 . 14(2)-18, 40-43..

Notes: Mṛkaṇḍu मृकण्डु is eulogizing Śiva शिव while being engaged in His worship and is visited by Nārada Muni नारद मुनि, thereafter Mṛkaṇḍu मृकण्डु re-engages to continue reciting the eulogy to Śiva शिव.

Proofread by Ruma Dewan

---

*Mrikundukrita Shiva Stuti*

pdf was typeset on August 20, 2023

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

